नियंत्रण करने के लिए ही हुआ था। इस लिए विद्वान इतिहासकारों द्वारा अनुमान लगाया जाता है कि इस संबंध से चन्द्रगुप्त प्रथम को प्रभूत आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ होगा। इस प्रकार चन्द्रगुप्त लिच्छवियों से वैवाहिक संबंध स्थापित कर राजनैतिक और आर्थिक दो दृष्टिकोण से समृद्ध हुआ।

चन्द्रगुप्त प्रथम के विजयों के बारे में विस्तृत जानकारी हमें प्राप्त नहीं होती है लेकिन वायु पुराण में किसी गुप्त शासक के साम्राज्य के बारे में बताया गया है कि गुप्त शासक गंगा के किनारे के प्रदेशों प्रयाग, साकेत तथा मगध पर शासन करेगा। चूँकि इसके पूर्व के दोनों शासक साधारण स्थिति के शासक थे और इसके बाद के शासक समुद्रगुप्त की सीमा काफी विस्तृत थी इसलिए ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि यह मगध से लेकर प्रयाग तक वाला क्षेत्र चन्द्रगुप्त प्रथम के कार्यकाल का है। मगध वाला क्षेत्र चन्द्रगुप्त को ~~विरासत~~ अपने पूर्वजों से विरासत में मिला होगा, लिच्छवी के वैशाली वाला क्षेत्र वैवाहिक संबंध के फलस्वरूप प्राप्त हुआ होगा और प्रयाग वाला क्षेत्र अपनी बाहुबल से प्राप्त जीत कर प्राप्त किया होगा। इस प्रकार चन्द्रगुप्त की सीमाएँ पूर्व के शासकों की अपेक्षा काफी बड़ी हो गई थी

Scanned with CamScanner

चन्द्रगुप्त-I को एक नये सम्वत
'गुप्त सम्वत' के निर्माण का श्रेय दिया जाता है
माना जाता है कि चन्द्रगुप्त राज्यारोहन के पश्चात
लिच्छवियों के साथ ~~विवाह~~ वैवाहिक संबंध स्थापित
किया था और इसी विवाह के उपलक्ष्य में इसने
एक सम्वत का निर्माण किया था जिसे 'गुप्त सम्वत'
कहा जाता है। चन्द्रगुप्त का राज्यारोहन 319-20 ई०
में किया गया था इसलिए 'गुप्त सम्वत' का प्रारम्भ
काल भी ईसन 319-20 ही है। अलबरुनी
अपनी पुस्तक में लिखता है कि गुप्त सम्वत और
शक सम्वत के बीच 241 वर्षों का अन्तर है। क्योंकि
शक सम्वत का प्रारम्भ काल ईस्वी सन 78 है, इसलिए
गुप्त सम्वत = 78 + 241 = 319 ई० सन। इस प्रकार
गुप्त सम्वत का प्रारम्भ 319 ई० सन में हुआ।

चन्द्रगुप्त-प्रथम ~~पहला~~ गुप्त वंश का
प्रथम (राजा) शासक था जिन्होंने अपने-आप को सामंत
की स्थिति से उपर उठकर राजा के रूप में अपने
आपको स्थापित किया और महाराजाधिराज की उपाधि
धारण की यह अपने जीवन काल में ही अपने पुत्र
समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर
दिया इसकी पुष्टि प्रयाग प्रशस्ति, एरण तथा स्कंदगुप्त
अभिलेख से भी होती है। चन्द्रगुप्त-I जिस गुप्त साम्राज्य
को राजनीतिक सम्मान दिलाया उसे समुद्रगुप्त ने एक
विशाल साम्राज्य के रूप में स्थापित किया।
व्याख्यान समाप्त